कोविड–19 लॉकडाउन से बुजुर्ग सबसे ज्यादा प्रभावित – एजवेल सर्वे

वैश्विक कोविड–19 महामारी के कारण लागू वर्तमान लॉक डाउन के दौरान बुजुर्ग सबसे अधिक प्रभावित हो रहे हैं। इस बात का खुलासा एजवेल फाउंडेशन नामक एनजीओ द्वारा कराये गये एक ताजा सर्वेक्षण में हुआ है। संस्थान वर्ष 1999 से देश में बुजुर्गों के कल्याण और सशक्तिकरण के क्षेत्र में कार्यरत है। सर्वेक्षण के तहत देशभर के 5000 बुजुर्गों के साथ एजवेल के वॉलन्टियरों द्वारा फोन पर बातचीत की गई थी। सर्वेक्षण का उद्देश्य बुजुर्गों के जीवन पर वर्तमान लॉक डाउन से उपजी स्थिति के प्रभावों का आकलन करना था।

सर्वेक्षण आंकड़ों के विश्लेषण के अनुसार, **70% बुजुर्ग या तो पहले से ही स्वास्थ्य संबंधी जटिलताओं का सामना कर रहे थे या वर्तमान कोविड–19 लॉकडाउन प्रतिबंधों के कारण उन्हें अपना स्वास्थ्य खराब होने का डर सता रहा है। सर्वेक्षण की अन्य मुख्य खोजें इस प्रकार हैं,**

- लगभग 55% बुजुर्ग उत्तरदाताओं ने कहा कि वर्तमान लॉक डाउन स्थिति उनकी स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही है। ऐसे बुजुर्गो में से 75% ने कहा कि उन्हें अपने डॉक्टर से व्यक्तिगत तौर पर न मिल पाने के कारण संतोष नहीं मिल पा रहा है। ऐसे बुजुर्ग रोगियों में से 43% नियमित रूप से पैथोलॉजिकल चेक–अप करा रहे थे, और उन्हें अचानक अपने चेक–अप बन्द कराने पड़े।
- 25% बुजुर्गों ने कहा कि लॉक डाउन से उनकी वर्तमान स्वास्थ्य स्थिति पर कोई खास प्रभाव नही ंपड़ा है। 5% बुजुर्गों ने कहा कि लॉक डाउन नियमों के परिणामस्वरूप स्वच्छ व प्रदूषणमुक्त वातावरण के कारण उनकी स्वास्थ्य स्थिति में सुधार हुआ है।
- 44% बुजुर्गों के अनुसार, रोजमर्रा की दवाओं /फिजियोथेरेपी तक पहुंच न हो पाना उनके सामने सबसे महत्वपूर्ण स्वास्थ्य चुनौती बन चुकी है।
- 34% उत्तरदाताओं के अनुसार चिंता, अनिद्रा, भूख की कमी और शारीरिक गतिविधि की कमी सबसे महत्वपूर्ण स्वास्थ्य संबंधी चुनौती रही।
- सर्वेक्षण के दौरान, आधे से अधिक (लगभग 54 प्रतिशत) बुजुर्गों ने स्वीकार किया कि कोरोनोवायरस लॉक डाउन होने के कारण उनका सामाजिक जीवन गड़बड़ा गया है। इन बुजुर्गों में, 71% ने दावा किया कि वे आजकल किसी से मिलने या बातचीत करने से डरते हैं।

सर्वेक्षण के लिए बुजुर्गों के साथ बातचीत के दौरान, वॉलन्टियरों ने महसूस किया कि अधिकांश बुजुर्ग इस नई महामारी के कारण उदास हैं। उन्होंने फोन पर बात करते समय अपना डर, चिंता और यहां तक कि वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों पर अपना गुस्सा भी प्रकट किया।

- सर्वेक्षण के दौरान, पाया गया कि 54% बुजुर्ग उत्तरदाता अपने युवा परिजनों (बच्चों/नाती–पोतों आदि) के साथ रह रहे थे, जबकि 33% अपने पति/पत्नी के साथ रह रहे थे और 13% उत्तरदाता लॉक डाउन के दौरान बिल्कुल अकेले रह रहे थे। ।
- 45% उत्तरदाताओं, जो अपने बच्चों/नाती–पोतों और अन्य युवा परिजनों के साथ घर पर रह रहे थे, ने स्वीकार किया कि लॉक डाउन ने पीढ़ियों के बीच की खाई को पाटने में मदद की है। हालाँकि, 55 प्रतिशत इस दृष्टिकोण से सहमत नहीं थे कि लॉक डाउन अवधि के दौरान अंतर–पीढ़ीगत अंतराल कम होने में मदद मिली है।

- लॉक डाउन अवधि के दौरान, 66% बुजुर्ग उत्तरदाताओं ने दावा किया कि व्यक्तिगत अहम, हितों और दृष्टिकोण के संघर्ष के कारण उनके पारस्परिक संबंध प्रभावित हुए हैं।
- 23% उत्तरदाताओं के अनुसार, आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी उपकरणों की लोकप्रियता के कारण परिजनों के पारस्परिक संबंधों पर बुरा प्रभाव पड़ा है।
- 31% ने दावा किया कि परिवार के बुजुर्ग सदस्यों पर युवा परिजनों की अत्यधिक निर्भरता के कारण रिश्तों में कड़वाहट आयी है।
- 20% बुजुर्गों ने दावा किया कि कामकाजी युवा परिजनों के 24–घंटे घर पर रहने के कारण उनके पास खुद के लिए कोई जगह नहीं बची है, जो उनकी खास चिंता है और इससे उनके आपसी रिश्ते प्रभावित हो रहे हैं।
- 15% बुजुर्गों ने कथित तौर पर स्वीकार किया कि बुढ़ापे में उनकी विशेष जरूरतों की उपेक्षा की जा रही है
- 11% उत्तरदाताओं ने कहा कि वे परिवार के युवा सदस्यों के आत्म–केंद्रित रवैये से अत्यधिक असंतुष्ट हैं
- एक दिलचस्प खोज में पाया गया कि अपने परिजनों के साथ रहने वाले 59% बुजुर्ग, अपने परिवार के बीच भी मनोवैज्ञानिक अकेलापन/अलगाव महसूस कर रहे हैं। इस स्थिति के प्राथमिक कारण थे – परिवार के युवा सदस्यों द्वारा उपेक्षा, आपसी संबंधों में खटास, बुजुर्गों के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार, परिजनों में कुंठा का बढ़ता स्तर, आदि।
- 65% बुजुर्गों ने शिकायत की कि लॉक डाउन के कारण उन्होंने अपनी आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान और यहां तक कि कुछ हद तक गरिमा भी खो दी है, क्योंकि उन्हें अपनी छोटी–मोटी जरूरतों के लिए भी दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है।
- 38% बुजुर्गों के अनुसार उनकी अधूरी उम्मीदें अब उनके रिश्तों पर हावी हो रही हैं।
- लगभग हर दूसरे बुजुर्ग व्यक्ति (51% उत्तरदाताओं) ने दावा किया कि लॉक डाउन अवधि के दौरान उनके मानवाधिकारों का हनन हो रहा है, उन्हें दुर्व्यवहार/उत्पीड़न (मानसिक या शारीरिक)/धमकी/प्रताड़ना/उपेक्षा/अपमान का शिकार होना पड़ रहा है।

इस अवसर पर एजवेल फाउंडेशन के संस्थापक अध्यक्ष श्री हिमांशु रथ ने कहा, ''वर्तमान कोविड–19 लॉक डाउन संकट के कारण, अधिकांश बुजुर्ग संघर्ष कर रहे हैं और अपने जीवन में एक अजीबोगरीब स्थिति का सामना कर रहे हैं। बुजुर्ग खुद को ठगा–सा महसूस कर रहे हैं। जो अकेले रह रहे हैं उनके सामने व्यावहारिक समस्याएं हैं और जो बुजुर्ग परिवारों के साथ रह रहे हैं, वे मनोवैज्ञानिक संकट का सामना कर रहे हैं। कोरोनोवायरस के मौजूदा तनाव युक्त माहौल में, बुजुर्ग आश्वस्त चिकित्सा और वित्तीय सहायता न मिलने और सामाजिक मेल–मिलाप न होने, आत्मनिर्भरता, आत्म–सम्मान, गरिमा में कमी आने के कारण उदास हो रहे हैं।'' श्री रथ ने आगे कहा, ''ऐसे हालात में सरकार को कुछ विशेष सहायता व त्वरित राहत पैकेजों की घोषणा करके बुजुर्गों की मदद करनी चाहिए।''

सर्वेक्षण की खोजों के आधार पर सरकार को निम्न सुझाव दिये गये हैं–

- बुजुर्गों के लिए हेल्पलाइन शुरू करना
- बुजुर्गों के लिए गारंटी युक्त सब्सिडी/ऋण और जीएसटी छूट जैसे बुजुर्गों के लिए – भोजन, आवास, देखभाल और चिकित्सा सेवाओं की घोषणा
- सीनियर सिटीजन्स होम्स के लिए सब्सिडी या ऋण और सहायता प्रदान करना

- बुजुर्ग रोगियों के लिए देखभाल केन्द्रों या सेवाओं की स्थापना
- बुजुर्गों के लिए किसान सम्मान निधि के तहत 6000 रु की सहायता प्रदान करना
- अनपढ़ शहरी और ग्रामीण बुजुर्गों में जागरूकता बढ़ाना और कोविड–19 महामारी के खिलाफ सुरक्षा उपायों को समझाने के लिए विशेष प्रयास करना
- बुजुर्गों के लिए विशेष सार्वजनिक वितरण केन्द्र स्थापित करना
- आवश्यक वस्तुओं (चावल/गेहूं, दाल, प्याज, मसाला, तेल, आलू) के पैकट वितरित करना
- बुजुर्ग देखभाल क्षेत्र के बारे में जागरूकता पैदा करना और बुजुर्ग देखभाल उद्योग के विकास के लिए नीतियां बनाना
- बुजुर्गों की निगरानी के लिए घरेलू स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की व्यवस्था करना
- बुजुर्गों के लिए चिकित्सा बीमा जैसी आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करके सुरक्षित वातावरण का निर्माण करना।

अधिक जानकारी के लिए, कृपया संपर्क करें:

. +91 9810030979, agewellfoundation@gmail.com, www.agewellfoundation.org